

## पद १५७

(राग: बिहाग - ताल: धीमा त्रिताल)

कोई तो समझावो, मनावो पीतमको। वेगी जावो कर जोर जोर  
पग सीस निवायके मनमोहन ले आवो ॥ध्रु. ॥ विरहदुःख मोहेको

न सहावत, घडिपल छन दिन कठिन दिखावत, अब प्राण निकल  
जात समयको, मानिक मुख दरसावो ॥१॥